Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-7| July-2026

Original Article

भारतीय राष्ट्रीय स्वतन्त्रता संग्राम में नारियों का योगदान

विद्याधर मिश्र
असिस्टेण्ट प्रोफेसर–इतिहास
रमाबाई राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय
अकबरपुर, अम्बेडकर नगर, उ. प्र. (भारत)
Email: prof.vdmisra@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2026-180734
ISSN: 2230-9578
Volume 18
Issue 7
Pp. 167-170
July- 2026
Submitted: 16 June. 2026
Revised: 26 June. 2026
Accepted: 11 July. 2026
Published: 31 July. 2026

सारांश

भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय रहा है। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से लेकर 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन तक महिलाओं ने प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भागीदारी निभाई। रानी लक्ष्मीबाई, झलकारी बाई, ऊदा देवी, बेगम हजरत महल जैसी वीरांगनाओं ने 1857 के विद्रोह में अदम्य साहस और वीरता का परिचय दिया। आगे चलकर एनी बेसेंट, सरोजिनी नायडू, कस्तूरबा गांधी, कमला नेहरू, सुचेता कृपलानी, अरुणा आसफ अली, उषा मेहता, विजयलक्ष्मी पंडित, दुर्गा भाभी और मैडम भीकाजी कामा जैसी महिलाओं ने राष्ट्रीय आंदोलन को व्यापक जनसमर्थन प्रदान किया। महात्मा गांधी के नेतृत्व में महिलाओं की भागीदारी और अधिक व्यापक हुई। असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, नमक सत्याग्रह तथा भारत छोड़ो आंदोलन में महिलाओं ने विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, शराब की दुकानों पर धरना, खादी का प्रचार, सत्याग्रह, जेल यात्राओं तथा भूमिगत गतिविधियों के माध्यम से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उषा मेहता ने भूमिगत रहकर कांग्रेस रेडियो के माध्यम से आंदोलनकारियों तक समाचार पहुँचाए, जबकि अरुणा आसफ अली और सुचेता कृपलानी ने भूमिगत रहकर भारत छोड़ो आंदोलन को आगे बढ़ाया। क्रांतिकारी आंदोलन में भी महिलाओं की भूमिका उल्लेखनीय रही। भीकाजी कामा ने विदेशों में भारत की स्वतंत्रता के पक्ष में प्रचार किया तथा 1907 में जर्मनी के स्टुटगार्ट में भारतीय ध्वज फहराया। दुर्गा भाभी ने क्रांतिकारियों की सहायता करते हुए भगत सिंह आदि को सुरक्षित स्थान तक पहुँचाने में साहसपूर्ण भूमिका निभाई। अतः स्पष्ट है कि भारतीय महिलाओं ने सामाजिक बंधनों, हिंसा, कारावास और अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए स्वतंत्रता संग्राम में अपना अमूल्य योगदान दिया। उनके सामूहिक प्रयासों ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को जन-आंदोलन का व्यापक स्वरूप प्रदान किया। महिलाओं ने स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ-साथ महिला शिक्षा, महिला अधिकार और सामाजिक जागरूकता के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का योगदान भारतीय इतिहास का गौरवपूर्ण और प्रेरणादायी अध्याय है।

मुख्य शब्द: *भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, महिला योगदान, राष्ट्रीय आंदोलन, 1857 का स्वतंत्रता संग्राम, रानी लक्ष्मीबाई, महिला सशक्तिकरण, असहयोग आंदोलन*

परिचय

भारत का प्रथम राष्ट्रीय स्वतन्त्रता संग्राम सन् 1857 ई. में आरम्भ हुआ। यद्यपि यह आन्दोलन तत्कालीन ब्रिटिश सरकार द्वारा दबा दिया गया था, फिर भी इस संग्राम के दूरगामी परिणाम निकलकर सामने आए। सबसे महत्वपूर्ण परिणाम यह था कि भारत से ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासन का अन्त हो गया। इस स्वतन्त्रता संग्राम के अन्त होते ही ब्रिटिश पार्लियामेण्ट ने अगस्त, 1858 ई0 में एक अधिनियम पारित कर भारत पर ईस्ट इण्डिया कम्पनी का शासन समाप्त कर दिया। गवर्नर जनरल लॉर्ड कैनिंग ने 1 नवम्बर 1858 को इलाहाबाद में आयोजित एक दरबार में ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया का घोषणा–पत्र पढ़कर सुनाया जिसमें यह कहा गया कि भारत में अब कम्पनी के स्थान पर ब्रिटेन की सरकार द्वारा प्रत्यक्ष रूप से शासन किया जाएगा।[i] भारत के इस राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में अनेक वीरांगनाओं ने भाग लिया था। तत्कालीन स्रोतों और बाद के इतिहासकारों और साहित्यकारों द्वारा इन महिलाओं की वीरता और साहस का विस्तार से वर्णन किया गया है।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
विद्याधर मिश्र असिस्टेण्ट प्रोफेसर–इतिहास रमाबाई राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय अकबरपुर, अम्बेडकर नगर–224122, उ. प्र. (भारत)

How to cite this article:
मिश्र, विद्याधर. (2026). भारतीय राष्ट्रीय स्वतन्त्रता संग्राम में नारियों का योगदान. Journal of Research and Development, 18(7), 167–170. https://doi.org/10.5281/zenodo.21944228

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.21944228
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-7| July-2026

1857 ई. में आरम्भ हुआ भारत का स्वतन्त्रता संग्राम 90 वर्षों तक चला। देश के स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों तथा क्रान्तिकारियों के अथक प्रयास और बलिदान के फलस्वरूप अन्ततः सन् 1947 ई. में देश को स्वतन्त्रता की प्राप्ति हुई। ब्रिटिश संसद द्वारा 18 जुलाई 1947 को भारतीय स्वतन्त्रता अधिनियम पास किया गया। इस अधिनियम में 15 अगस्त, 1947 को भारत की आजादी की प्रभावी तिथि (the Appointed Date) घोषित किया गया। इस लम्बे चलने वाले स्वतन्त्रता आन्दोलन में भारत के हर वर्ग, क्षेत्र, समुदाय तथा समाज का योगदान रहा। जहाँ तक नारियों के योगदान की बात है, राष्ट्रीय आन्दोलन में उनका योगदान हर स्तर पर प्रभावी ढंग से दिखाई पड़ता है। कई महिला स्वतन्त्रता–संग्राम सेनानी, उच्च शिक्षित थीं और विशेषाधिकार प्राप्त पृष्ठभूमि से आती थीं, फिर भी उन्होंने राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेने का निश्चय किया। उन्होंने जनमानस में राष्ट्रीयता का प्रसार करने में अपनी शिक्षा और विशेषाधिकार पृष्ठभूमि का उपयोग किया। कुछ महिलाएं प्रत्यक्ष रूप से राष्ट्रीय आन्दोलन में शामिल हुईं जबकि अन्य भूमिगत संगठनों में शामिल हो गईं तथा ब्रिटिश सरकार के खिलाफ होने वाली गतिविधियों में भाग लिया। महिला स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों ने समाज के पितृसत्तात्मक मानदण्डों को पार कर तथा लैंगिक बाधाओं को तोड़कर उन गतिविधियों में भाग लिया जिन्हें पारम्परिक रूप से पुरुषों का क्षेत्र माना जाता था। इन महिला स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, झलकारी बाई, ऊदा देवी, अवध की बेगम हजरतमहल, दिल्ली की जीनत महल, श्रीमती एनी बेसेण्ट, भीकाजी कामा, दुर्गा भाभी, पण्डिता रमाबाई, सावित्रीबाई फूले, सिस्टर निवेदिता, कल्पना दत्ता, कनकलता बरुआ, पूर्णिमा बनर्जी, अम्मू स्वामीनाथन, लीला रॉय, कस्तूरबा गाँधी, सरोजिनी नायडू, राजकुमारी अमृतकौर, कमला नेहरू, उमा नेहरू, विजयलक्ष्मी पण्डित, सुचेता कृपलानी, अरुणा आसफ अली, उषा मेहता, लक्ष्मी सहगल, बसन्ती डे, उर्मिला देवी, सुनीति, कमलादेवी चट्टोपाध्याय, दुर्गाबाई देशमुख, पद्मजा नायडू, रानी गिडाल्यू, स्वर्णकुमारी घोषाल, कादम्बरी गांगुली, कित्तूर चेन्नमा सहित अनेक वीरांगनाओं का नाम बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है।

1857 की क्रान्ति की देवी थीं **झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई**। उनका जन्म 19 नवम्बर 1835 को बनारस में हुआ था। उनका असली नाम 'मणिकर्णिका' था। प्यार से लोग उन्हें 'मनु' कहते थे। 11 वर्ष की आयु में ही उनका विवाह झाँसी के राजा गंगाधर राव से हो गया। राजा और रानी ने दामोदर राव नाम के एक बच्चे को गोद लिया था। जिसे वे अपना उत्तराधिकारी घोषित करना चाहते थे। किन्तु, नवम्बर 1853 में गंगाधर राव की अचानक मृत्यु होने से रानी के ऊपर मानो विपदाओं का पहाड़ ही टूट पड़ा। रानी लक्ष्मीबाई के प्रार्थना पत्र को अस्वीकार करते हुए, ब्रिटिश सरकार ने दामोदर राव को झाँसी के उत्तराधिकारी के रूप में मान्यता प्रदान नहीं की। लॉर्ड डलहौजी ने शीघ्र ही झाँसी को ब्रिटिश राज्य में सम्मिलित करने की घोषणा कर दी। गंगाधर राव की मृत्यु के पश्चात् झाँसी का राजकाज रानी स्वयं देखने लगीं। उन्होंने ब्रिटिश हुकूमत के सामने अपना सिर नहीं झुकाया। उन्होंने घोषणा की–**मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी।** उन्होंने झाँसी की सेना में 1000 महिलाओं की एक विशेष सैन्य टुकड़ी का निर्माण भी कर लिया था जो 1857 में अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई में शामिल हुई थी। रानी ने स्वयं युद्धस्थल में अंग्रेजी सेना के खिलाफ मोर्चा सँभाला। ग्वालियर में युद्ध करते हुए वे 18 जून, 1858 को वीरगति को प्राप्त हुईं उस समय उनकी आयु मात्र 23 वर्ष की थी। उनकी वीरता से प्रभावित **जनरल ह्यू रोज ने कहा था–''झाँसी की रानी, सभी क्रान्तिकारियों में सबसे बहादुर और सबसे तेज सैनिक नेता थीं।**'' रानी लक्ष्मीबाई पर लिखी गई सुभद्राकुमारी चौहान की यह कविता सभी को याद होगी–''बुन्देले हर बोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी, खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।'' **झलकारी बाई** ने भी 1857 के आन्दोलन में रानी लक्ष्मीबाई के साथ मिलकर कार्य किया। वे रानी लक्ष्मीबाई की सेना भर्ती हुईं। अंग्रेज सेनापति ह्यू रोज द्वारा झाँसी के किले को घेर लेने के पश्चात् रानी को किले से बाहर निकालने में उन्होंने प्रमुख भूमिका निभाई। **बेगम हजरतमहल** ने 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान अवध में अंग्रेजों के खिलाफ आन्दोलन का नेतृत्व किया। वे अवध के नवाब वाजिद अली शाह की दूसरी पत्नी थीं। जब अंग्रेजों ने नवाब को अवध से निर्वासित कर कलकत्ता भेज दिया तब बेगम ने लखनऊ पर कब्जा कर लिया। उन्होंने अपने पुत्र बिरजिस कद्र को नवाब घोषित किया और ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी के खिलाफ विद्रोह कर दिया। किन्तु, बाद में वे पराजित हुईं और उन्हें नेपाल में शरण लेनी पड़ी। **ऊदा देवी**, अवध के नवाब वाजिद अली शाह के महिला सैन्य दस्ते की एक वीरांगना थीं। 1857 की क्रान्ति के समय लगभग 2000 भारतीय सैनिक लखनऊ के सिकन्दर बाग में शरण लिए हुए थे। ब्रिटिश सेना ने उन पर धावा बोल दिया। उसी समय ऊदा देवी ने भारतीय सैनिकों की ओर से मोर्चा सँभाला। वे पुरुष वेश में तैयार होकर अपने साथ एक बन्दूक तथा कुछ गोला बारूद लेकर एक पेड़ पर चढ़ गयीं और ब्रिटिश सैनिकों को तब तक बाग में प्रवेश नहीं करने दिया जब तक कि उनके सभी गोला बारूद समाप्त नहीं हो गये। उन्होंने 36 अंग्रेज सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया था। अन्ततः, ब्रिटिश सैनिकों से युद्ध करते हुए वे 16 नवम्बर, 1857 को लखनऊ में शहीद हो गयीं। अन्तिम मुगल सम्राट् बहादुरशाह जफर की बेगम **जीनत महल** ने बहादुरशाह के देश निष्कासन के बाद दिल्ली में अपने राजनीतिक और कूटनीतिक प्रयासों से राष्ट्रीय आन्दोलन का समर्थन किया।

1885 ई. में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के बाद से भारत के स्वतन्त्रता संग्राम को एक संगठित स्वरूप मिल गया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का पर्याय बन गई। इसके सम्मेलनों में महिलाएं भी भाग लेती थीं। 1890 ई. में कलकत्ता में हुए कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में भाग लेने वाली ऐसी महिलाओं में **स्वर्णकुमारी घोषाल तथा कादम्बरी गांगुली** का नाम लिया जा सकता है। पण्डिता रमाबाई तथा सावित्रीबाई फूले ने भारतीय नवजागरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा महिलाओं के उत्थान और उनकी शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए। बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन एक नई दिशा की ओर बढ़ा। कांग्रेस में उदारवाद का युग अब समाप्त हो रहा था और उग्रवादी राजनीति भारी पड़ रही थी। गरमपंथी नेताओं ने अब राष्ट्रीय आन्दोलन को अपना नेतृत्व प्रदान किया। इनमें लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक, बिपिनचन्द्र पाल और अरविन्द घोष के नाम विशेष रूप से लिए जा सकते हैं। 1905 ई0 में हुए बंगाल विभाजन का पूरे देश में व्यापक विरोध हुआ था। इस विरोध में भारतीय महिलाओं ने भी भाग लिया था। बंगाल में, एकता के प्रतीक, हिन्दुओं और मुसलमानों ने एक दूसरे को राखी बाँधकर आपसी भाईचारे को मजबूत होने का संकेत दिया था। इसी समय आरम्भ हुए स्वदेशी आन्दोलन में भी महिलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वदेशी के साथ, बहिष्कार अनिवार्य रूप से जुड़ चुका था। विदेशी सामानों के बहिष्कार में भारतीय महिलाएं पुरुषों से आगे रहीं थी। आयरिश मूल की महिला **श्रीमती एनी बेसेण्ट** ने बाल गंगाधर तिलक के साथ मिलकर भारत में स्वशासन की स्थापना के लिए होमरूल लीग की स्थापना की। 1917 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में उन्हें अध्यक्ष चुना गया। वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की प्रथम महिला अध्यक्ष थीं। उनके साथ मंच पर सरोजिनी नायडू भी थीं जो कांग्रेस की कार्यवाही में सम्मिलित हुई थीं।

महात्मा गाँधी का भारतीय राजनीति में प्रवेश सन् 1915 ई. में हुआ। सबसे पहले उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में किए गए अपने सत्य के प्रयोग सहित अन्य राजनीतिक प्रयोगों को भारत में भी आजमाना आरम्भ किया। गाँधीजी नारीशक्ति को अच्छी तरह से पहचानते थे। उन्होंने भारतीय महिलाओं को व्यापक रूप से भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेने का आह्वान किया। उन्होंने सीता, सावित्री तथा द्रौपदी को भारतीय नारियों के लिए आदर्श बताया। उन्होंने महिलाओं को उनकी अपनी क्षमता के अनुसार कार्य करने को कहा। 1919 तक महिलाएं भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में पूरी तरह से सक्रिय हो गई थीं। 1919 के बाद वे राजनीतिक जुलूसों, सभाओं, विरोध प्रदर्शनों में भाग लेने तथा विदेशी वस्त्रों और शराब की दुकानों पर धरना देने लगीं।

असहयोग आन्दोलन के दौरान महिलाओं ने चरखा चलाकर अपनी महती भूमिका अदा की। स्वदेशी वस्त्रों के निर्माण से, खादी राष्ट्रीय आन्दोलन का प्रतीक बन गयी। असहयोग आन्दोलन के दौरान अनेक महिलाएं जेल भी गईं। इनमें बसन्ती डे, उर्मिला देवी तथा सुनीति प्रमुख हैं। बंगाल की कल्पना दत्ता ने असहयोग आन्दोलन में भाग लिया और धरना देने तथा विदेशी कपड़े जलाने के आरोप में गिरफ्तार की गयीं तथा जेल भी गयीं। इसी प्रकार लीला रॉय भी असहयोग आन्दोलन की प्रमुख कार्यकर्त्री थीं जिन्हें कई बार गिरफ्तार किया गया था। देश के कोने–कोने में महिलाओं ने खादी बेंचकर तथा शराब और ताड़ी की दुकानों पर धरना देकर, सरकारी कानूनों को तोड़कर तथा विदेशी सामानों का बहिष्कार कर गिरफ्तारियाँ दीं। पेशावर षडयन्त्र केस में प्रमुख क्रान्तिकारी महिला नलिनी गुप्ता को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया था।[ii] **श्रीमती सरोजिनी नायडू** को 1925 में हुए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कानपुर अधिवेशन का अध्यक्ष चुना गया। वे एक महान कवियत्री, स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी तथा कुशल राजनीतिज्ञ भी थीं। उनकी उत्कृष्ट कविताओं के कारण उन्हें 'भारत कोकिला' कहा गया है।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन के समय भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाओं की भूमिका सर्वोत्कृष्ट थी। अपनी गिरफ्तारी के पहले ही गाँधीजी ने जोरदार तरीके से विदेशी कपड़ों तथा शराब के बहिष्कार का आह्वान किया था। उन्होंने महिलाओं को विशेष रूप से इसमें जोरदार भूमिका निभाने के

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-7| July-2026

लिए कहा था। गाँधीजी ने 1930 में हिन्दी नवजीवन में लिखे एक लेख में कहा था–''महिलाओं को कमजोर कहना उनका अपमान है। यह पुरुषों का महिलाओं के प्रति अन्याय है। अगर शक्ति से मतलब पाशविक शक्ति से है तो निस्संदेह पुरुष की अपेक्षा स्त्री में कम पशुता है, पर अगर इसका मतलब नैतिक शक्ति से है तो अवश्य ही पुरुष की अपेक्षा स्त्री कहीं अधिक शक्तिशालिनी है..... अगर अहिंसा हमारे जीवन का ध्यानमन्त्र है तो कहना होगा कि इस देश का भविष्य स्त्रियों के हाथ में है।[iii]** 1930 में भारत की महिलाओं ने विशेष रूप से यह दिखा दिया कि वे शक्ति और सामर्थ्य में किसी से कम नहीं हैं। जो महिलाएं अकेले कभी अपनी देहरी से बाहर नहीं निकली थीं, जो पर्दे में रही थीं, वे युवा माताएं और विधवाएं और अविवाहित लड़कियाँ अकसर सबेरे से लेकर शाम तक शराब की दुकानों के सामने तथा विदेशी कपड़ों की दुकानों और नशीले पदार्थों की दुकानों के आगे धरना दिए नजर आती थीं। उस समय यह दृश्य बहुत सामान्य था। वे चुपचाप लेकिन दृढ़तापूर्वक लोगों से (ग्राहकों से) आग्रह करती थीं कि वे अपना दृष्टिकोण बदलें।[iv] नमक सत्याग्रह के समय गाँधीजी की गिरफ्तारी के बाद 21 मई, 1930 को सरोजिनी नायडू, इमाम साहब तथा गाँधीजी के पुत्र मणिलाल 2000 कार्यकर्ताओं को अपने साथ लेकर इनका नेतृत्व करते हुए उस घेरे की तरफ दृढ़तापूर्वक बढ़े जो धरासना नमक कारखाने की रक्षा के लिए बनाया गया था।[अ] **कस्तूरबा गाँधी** ने धरासना और बोरसद की भी यात्रा की। और नमक सत्याग्रहियों का उत्साह बढ़ाया। 1932 और 1935 में तो बा का अधिकांश जीवन जेल में ही बीता।[अप] **सुचेता कृपलानी** नमक सत्याग्रह में भाग लिया और कई बार गिरफ्तार की गयीं। स्वतन्त्र भारत में वे उत्तर प्रदेश राज्य की मुख्यमन्त्री निर्वाचित हुईं। आंध्र प्रदेश में महिलाओं के जत्थे मीलों चलकर नमक कानून को चुनौती देने पहुँचे थे। **अम्मू स्वामीनाथन** ने नमक सत्याग्रह में भाग लिया और कई बार गिरफ्तार भी की गईं। वह भारत की संविधान सभा की सदस्य भी थीं। मणिपुर में जन्मी नागा समुदाय की **रानी गिडाल्यू** ने 13 वर्ष की अल्पायु में ही राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लिया और पूर्वोत्तर भारत के आदिवासी समुदाय को भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। अक्टूबर, 1932 में उन्हें गिरफ्तार कर 14 वर्षों का कारावास दिया गया। 1947 में देश की आजादी के बाद ही उन्हें कारावास से मुक्ति मिल सकी।

प्रोफेसर बिपिनचन्द्र लिखते हैं कि जनता को हरकत में लाने के अनेक रूपों को इस आन्दोलन ने लोकप्रिय बनाया। गाँवों और कस्बों में 'प्रभात फेरियाँ' नियम–सी बन गई थीं जिसमें औरत और बच्चे प्रातःकाल झुण्ड बनाकर राष्ट्रीय गान गाते हुए गली–गली घूमा करते थे।..... गाँवों तक राष्ट्रीय संदेश पहुँचाने के लिए 'जादुई लालटेनें' काम में लाई जाती थीं। और पहले की तरह ही कार्यकर्ताओं और नेताओं द्वारा लगातार दौरे, स्त्री–पुरुषों के दलों द्वारा दौरे और उसके दौरान सभाएं, बैठकें और छोटी–छोटी जनसभाएं आन्दोलन का केन्द्रीय आधार बनी रहीं। बच्चों की 'वानर सेना' संगठित की गई और एक स्थान पर लड़कियों ने अलग से 'माजेरी सेना' बनाने की माँग रखी (भारत का स्वाधीनता संघर्ष)।

1942 के भारत छोड़ों आन्दोलन में भी महिलाओं ने बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया था। **सुमित मोररजी**, जो बाद में देश की प्रथम महिला उद्योगपति बनीं, ने आन्दोलन के लिए अपनी थैली खोल दी थी। उन्होंने अन्य पूँजीपतियों के साथ राष्ट्रीय आन्दोलन को चलाने के लिए आर्थिक सहायता प्रदान की। **उषा मेहता**, डॉ. राममनोहर लोहिया के साथ मिलकर 'कांग्रेस रेडियो' का गुप्त रूप से प्रसारण कर रही थीं। इसके माध्यम से देश के क्रान्तिकारियों को खबरे पहुँचायी जा रही थीं। वे महिलाओं के उत्थान और उनकी शिक्षा की प्रबल समर्थक थीं। भारत छोड़ो आन्दोलन में उषा मेहता के साथ सुचेता कृपलानी, सरोजिनी नायडू, अरुणा आसफ अली आदि महिलाओं की अग्रणी भूमिका थी। **अरुणा आसफ अली** तथा सुचेता कृपलानी भूमिगत होकर आन्दोलन को आगे बढ़ा रहीं थी। **कनकलता बरुआ** ने 17 वर्ष की आयु में ही भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया और राष्ट्रीय ध्वज फहराते हुए शहीद हो गयीं। **विजयलक्ष्मी पण्डित** ने न केवल राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाई बल्कि स्वतन्त्रता के बाद देश में कैबिनेट पद सँभालने वाली प्रथम महिला मन्त्री भी बनीं जिन्हें स्थानीय स्वशासन और स्वास्थ्य मन्त्रालय का कार्यभार दिया गया। वे कई देशों में भारत की राजदूत भी रहीं और संयुक्त राष्ट्र महासभा की अध्यक्ष चुनी गयीं। महिलाओं के अधिकारों और शिक्षा की दिशा में कार्य करने वाली विजयलक्ष्मी पण्डित ने भारतीय स्वाधीनता संघर्ष को एक सशक्त आवाज दी।

भारत के क्रान्तिकारी आन्दोलन में भी महिलाएं विशेष रूप से शामिल थीं। एक तरफ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के द्वारा स्वतन्त्रता का आन्दोलन चलाया जा रहा था तो दूसरी तरफ क्रान्तिकारी आन्दोलन की गतिविधियाँ भी बढ़ रहीं थीं। अनेक क्रान्तिकारी न केवल देश के अन्दर बल्कि विदेशों में भी भारतीय स्वतन्त्रता के लिए सक्रिय कार्य कर रहे थे। इनमें लन्दन में श्यामजी कृष्ण वर्मा और विनायक दामोदर सावरकर प्रमुख थे। जुलाई, 1905 में श्यामजी कृष्ण वर्मा ने लन्दल में 'इण्डिया हाउस' की स्थापना की थी जो आगे चलकर भारतीय क्रान्तिकारियों की गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र बन गया। वे भारतीय युवकों को लन्दन में शिक्षा ग्रहण करने के लिए छात्रवृत्ति देकर सहायता करते थे। **मैडम भीकाजी कामा** 1905 में इन क्रान्तिकारियों के सम्पर्क में आयीं। 1861 में मुम्बई में जन्मी भीकाजी कामा, लन्दन में दादाभाई नौरोजी की प्राइवेट सेक्रेटरी भी रहीं। उन्होंने 1906 से 1914 तक लन्दन, पेरिस और जेनेवा में भारतीय स्वतन्त्रता के पक्ष में प्रचार किया। 1907 में उन्होंने जर्मनी के स्टुटगार्ड में हुई अन्तराष्ट्रीय सोशलिस्ट कांग्रेस में भाग लिया। यहीं पर उन्होंने भारत का प्रथम तिरंगा राष्ट्रध्वज फहराया था। इस ध्वज में तीन क्षैतिज पट्टियाँ थीं–हरी, पीली और लाल। हरी पट्टी पर कमल के आठ चित्र बने थे। पीली पट्टी पर देवनागरी लिपि मे 'वन्देमातरम्' लिखा था तथा लाल पट्टी पर एक तरफ अर्धचन्द्र और दूसरी तरफ सूरज के चित्र बने थे। इसी वर्ष उन्होंने अमेरिका की भी यात्रा की और वहाँ के लोगों को भारत की दुर्दशा से परिचित कराया। 1909 में उन्होंने 'वन्देमातरम्' पत्र का प्रकाशन शुरू किया। वे पेरिस में रहती थीं और वहाँ से 'तलवार' नामक एक अन्य पत्र का प्रकाशन भी करती थीं। ये दोनों पत्र भारत में प्रतिबन्धित थे। इनमें भारत की स्वतन्त्रता की पुरजोर वकालत की जाती थी। उनके ओजस्वी भाषण के कारण लोग उन्हें **काली का अवतार** मानते थे। 1907 में इलाहाबाद में जन्मी दुर्गावती देवी भारत की प्रमुख क्रान्तिकारी थीं। इतिहास में उन्हें **दुर्गा भाभी** के नाम से जाना जाता है। उनका विवाह 11 वर्ष की आयु में भगवती चरण वोहरा से हुआ था, जो स्वयं एक महान क्रान्तिकारी थे। विवाह के बाद वे लाहौर में आकर बस गयीं। दुर्गा भाभी अपने पति भगवती चरण वोहरा के साथ क्रान्तिकारी गतिविधियों में बराबर भाग लेती थीं। अक्टूबर, 1928 में लाहौर में साइमन कमीशन का विरोध करते हुए लाला लाजपत राय पर ब्रिटिश पुलिस द्वारा लाठियों से भीषण प्रहार किया गया जिसके कारण 1 नवम्बर, 1928 को लालाजी दिवंगत हो गए। लाठी चार्ज का आदेश देने वाला पुलिस अधिकारी एस.पी. साण्डर्स था। चन्द्रशेखर आजाद के नेतृत्व में भगतसिंह और राजगुरु ने 17 दिसम्बर, 1928 को साण्डर्स की हत्या कर दी। जब क्रान्तिकारियों द्वारा लाहौर में साण्डर्स की हत्या कर दी गयी, उस समय भगतसिंह सहित अन्य क्रान्तिकारियों को वहाँ से सुरक्षित निकालने में दुर्गा भाभी ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। साण्डर्स की हत्या के बाद भगतसिंह कलकत्ता चले गए। इस यात्रा में दुर्गा भाभी उनकी पत्नी के रूप में गई थीं। राजगुरु उनके सहायक के रूप में यात्रा कर रहे थे। उनका बेटा शची भी उनके साथ था। उद्देश्य यह था कि किसी तरह पुलिस की आँखों में धूल झोंककर भगतसिंह कलकत्ता पहुँच जाएं। दुर्गा भाभी ने कोट की जेब में भरी पिस्तौल छिपा रखी थी ताकि आवश्यकता पड़ने पर इसका तत्काल उपयोग किया जा सके। जोखिम भरी यात्रा थी। लेकिन सफल हुई। उनके पति भगवतीचरण वोहरा हावड़ा रेलवे स्टेशन पर मिले।[vii] 28 मई, 1930 को क्रान्तिकारियों द्वारा बनाए गए एक बम के परीक्षण के दौरान उसमें अचानक विस्फोट हो जाने से भगवती चरण वोहरा की असामयिक मृत्यु हो गयी। यह दुर्गा भाभी के लिए एक बहुत बड़ा आघात था। परन्तु, इसके बाद भी वे क्रान्तिकारी गतिविधियों में लगी रहीं। वे लगातार भगतसिंह तथा अन्य क्रान्तिकारियों के सम्पर्क में बनी रहीं तथा उनकी रिहाई के लिए महात्मा गाँधी से भी मिली थीं।

निष्कर्षतः, भारत के राष्ट्रीय स्वतन्त्रता संग्राम में भारतीय महिलाओं की महती भूमिका स्वयंसिद्ध है। देश के हर वर्ग और क्षेत्र की महिलाएं इस संग्राम में शामिल हुईं। दुर्गा भाभी जैसी क्रान्तिकारी महिलाओं ने तो अपने जीवन का महत्वपूर्ण समय क्रान्तिकारियों के साथ रहकर क्रान्तिकारी गतिविधियों में ही बिताया। उषा मेहता तथा उनकी जैसी अन्य क्रान्तिकारी महिलाओं ने भूमिगत रहकर राष्ट्रीय आन्दोलन में अपना बहुमूल्य योगदान किया। इन सबके सम्मिलित प्रयास से ही भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त हुई। हिंसा, कारावास, सामाजिक वेदनाओं को सहते हुए ये महिलाएं भारत की स्वतन्त्रता के लिए डटी रहीं। इन्होंने अनेक चुनौतियों का सामना करते हुए महिला अधिकारों और शिक्षा के प्रति भी जागरूकता जगायी। ऊदा देवी ने अकेले ही अंग्रेज सैनिकों का मार्ग अवरुद्ध कर दिया था। उनकी विरासत आज भी हमें प्रेरणा देती है। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में उनका अप्रतिम योगदान भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात्, आधुनिक भारत राष्ट्र का निर्माण करने में भी भारतीय महिलाओं ने अपनी भूमिका अच्छी तरह से

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-7| July-2026

निभाई है। आज भारत विश्व में एक सशक्त और मजबूत राष्ट्र के रूप अपनी उपस्थिति दर्ज कराने सफल हुआ है, जिसमें भारतीय महिलाओं का विशेष योगदान है।

संदर्भः–

1. मिश्र, जगन्नाथ प्रसादः आधुनिक भारत का इतिहास, तृतीय संस्करण, 1983, पृष्ठ संख्या–427, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन हिन्दी भवन, महात्मा गाँधी मार्ग, लखनऊ–226001 द्वारा प्रकाशित।
2. सरकार, सुमित : आधुनिक भारत, पहला छात्र संस्करण, 1993, आठवीं आवृत्ति 2001, पृष्ठ संख्या–269 राजकमल प्रकाशन, प्रा.लि., 1–बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली–110002।
3. गाँधी, महात्माः हिन्दी नवजीवन, 10.04.1930, पृष्ठ सं. 377।
4. बिपिन चन्द्र एवं अन्यः भारत का स्वतन्त्रता संघर्ष, प्रथम संस्करण, 1990, पुनर्मुद्रण, 1993, पृष्ठ संख्या–215–216 हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, ई.ए./6, मॉडल टाउन, दिल्ली–110009 द्वारा प्रकाशित।
5. बिपिन चन्द्र एवं अन्यः भारत का स्वतन्त्रता संघर्ष, प्रथम संस्करण, 1990, पुनर्मुद्रण, 1993, पृष्ठ संख्या–214 हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, ई.ए./6, मॉडल टाउन, दिल्ली–110009 द्वारा प्रकाशित।
6. विश्व प्रकाश गुप्त एवंः स्वतन्त्रता संग्राम और महिलाएं, द्वितीय संस्करण, 2008, पृष्ठ संख्या–247, मोहिनी गुप्त नमन प्रकाशन, 4378/4B, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली–110002 द्वारा प्रकाशित।
7. विश्व प्रकाश गुप्त एवंः स्वतन्त्रता संग्राम और महिलाएं, द्वितीय संस्करण, 2008, पृष्ठ संख्या–293, मोहिनी गुप्त नमन प्रकाशन, 4378/4B, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली–110002 द्वारा प्रकाशित।